श्री सोलह कारण मंडल विधान

सोलह कारण मंडल के १६ कोठों में ३१३ अर्घ चढ़ाए जाते हैं।

ये पर्व वर्ष में तीन समय मनाये जाते हैं।

१. भाद्रपद बदी एकम से आसोज बदी एकम तक
२. माघ बदी एकम से फाल्गुन बदी एकम तक
३. चैत्र बदी एकम से बैसाख बदी एकम तक

अर्घ

जल फल आठों द्रव्य चढ़ाय, 'द्यानत' बरत करो मनलाय।
परम गूरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।
दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतीचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तिस्त्याग, शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अरहंतभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचन वात्सल्य षोडषकारणेभ्यों अनर्घपदप्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।